पारंपरिक वेशभूषा में आये बदलाव का एक अध्ययनः बिहार राज्य के संदर्भ में

डा. गिरीश गौरव

(सहायक प्राध्यापक)

स्माजशास्त्र एवं सामाजिक नृविज्ञान विभाग

केन्द्रीय विश्वविद्यालय, हिमाचल प्रदेश

साराँश

प्रस्तुत अध्ययन में भारतीय वेशभूषा में आये बदलाव को चिन्हित करने का प्रयास किया गया है। इसमें यह जानने का प्रयास किया गया है कि विभिन्न कालखण्डों से होते हुए आज हमारा परिधान या वेशभूषा किस स्थिति में पहुँच गया है। इसके लिए तीन विभिन्न संस्कृतिक क्षेत्रों यथा-भोजपुरी, मगही एवं मैथिली से कुल 300 ग्रामीणों का चयन किया गया। उन लोगों से एक 45 एकांशों वाली प्रश्नावली अनुसूची पर जवाब लिया गया। अनुसूची पर प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण एस0पी0एस0एस0 नामक सांख्यिकीय सॉफ्टवेयर पर किया गया। परिणाम में पाया गया कि वर्तमान समय में भारतीय पोशाकों में पर्याप्त परिवर्तन आ गया है। जहाँ पहले भारतीय लोग धोती-कुर्ता, दुपट्टा, पगड़ी, गमछा, गमछा, चादर, खडाऊँ साडी-ब्लाउज, चूड़ी-लहठी, सिंदूर, मंगलसूत्र, सूट-सलवार, बुरका, ओढ़नी-चुनरी, हिजाब, साफा, जरीदार टोपी, चूड़ीदार पायजामा तथा गोदना आदि पहनते थे वहीं अब लोग उसके स्थान पर पैंट-शर्ट, पायजामा, रूमाल, टी-शर्ट, टोपी, सूट-सलवार, फ्रॉक, गाउन, लहंगा, घाघरा-चोली, कोट-पैंट, शेरवानी आदि पहनने लगे हैं।

मुख्य बिन्दूः वेशभूषा , सांस्कृतिक क्षेत्र, पोशाक में परिवर्तन, धोती-कुर्ता, पैंट-शर्ट आदि।

भूमिका

वेशभूषा किसी भी व्यक्ति की पहचान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होती है। यह न केवल उनके समाज और संस्कृति को प्रतिविम्बित करती है, बल्कि उनकी व्यक्तिगत पहचान और व्यक्तित्व का भी परिचायक होती है। वेशभूषा के माध्यम से व्यक्ति अपनी सामाजिक स्थिति, धर्म, पेशा और व्यक्तिगत रूचियों को भी प्रदर्शित करता है। भारत के हर राज्य और क्षेत्र की अपनी विशिष्ट वेशभूषा है। उदाहरण के लिए राजस्थान में पुरूष धोती-कुर्ता और मगड़ी पहनते हैं जबकि महिलाएँ घाघरा-चा ोली पहनती हैं। वहीं केरल में पुरूष मुंडु और महिलाएँ साड़ी पहनती हैं। यह विविधता भारतीय संस्कृति की धरोहरको दर्शाती

है और विभिन्न तयोहारों और अवसरों पर अलग-अलग परिधानों का महत्व और बढ़ जाता है। इतिहास में वेशभूषा का महत्व बहुत अधिक रहा है। विभिन्न सभ्यताओं में कपड़े और आभूषणों के माध्यम से शक्ति, समृद्धि और सामाजिक स्थिति का प्रदर्शन किया जाता था। राजा-महाराजाओं के समय में उनकी वेशभूषा उनके रूतबे और शान-शौकत को दर्शाती थी। इसी प्रकार, धर्म और आध्यात्मिकता से जुड़े लोग अपने विशिष्ट परिधानों से पहचाने जाते थे। वेशभूषा के माध्यम से संस्कृति और परंपराओं का संरक्षण किया जाता है। त्यौहारों, शादियों और अन्य सांस्कृतिक आयोजनों में पारंपरिक परिधानो का प्रयोग एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह हमारे पूर्वजों की धरोहर को जीवित रखने और अगली पीढ़ी को हस्तांतरित करने का माध्यम है। आधुनिक युग में वेशभूषा का स्वरूप बदल गया है। आजकल लोग फैशन और आराम को प्राथमिकता देते हैं। पश्चिमी कपड़ों का प्रभाव भी बढ़ा है और लोग अब जीन्स, टी-शर्ट, स्कर्ट आदि पहनना पसंद करते हैं। हालांकि विशेष अवसरों परपारंपरिक वेशभूषा पहनने का प्रचलन अब भी बना हुआ है।

विभिन्न काल खण्डों में वस्त्रों एवं परिधानों का विकास

सिन्धु घाटी सभ्यता (2600 से 1400 ईसा पूर्व)- सिन्धु घाटी सभ्यता में मिले हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो के प्रागैतिहासिक साक्ष्यों के अन्तर्गत चांदी के गमले में कपास, करघना, सूत कातते एवं बुनते मूर्तियों से पता चलता है कि उस काल में भी लोग कपास से परिचित थे एवं वस्त्रों को बिना सिले या थोड़ा बुनकर शरीर पर घारण करते थे। इस युग में सूती वस्त्र उद्योग पर्याप्त रूप से विकसित था तथा लोग वस्त्रों को रंग कर भी पहनते थे। इसके अलावा इस युग में सन, रेशम, ऊन, लिनन एवं चमड़े आदि का भी प्रयोग करते थे।

वैदिक काल (1500 से 500 ईसा पूर्व)- वैदिक युग में भी सूत कातने एवं अन्य प्रकार के साधनों के प्रयोग का उल्लेख मिलता है। इस समय उन्नत श्रेणी के वस्त्रों का उपयोग होने लगा था, जिन्हें मुख्य रूप से स्त्रियों द्वारा ही बुना जाता था। यद्यपि कि इस काल में भी महिलाओं एवं पुरूषों में शरीर का ऊपरी भाग निःवस्त्र रहता था। ऋग्वेद संहिता में पत्नियों द्वारा साड़ी पहनने के विधान का उल्लेख मिलता है।

मौर्य वंश (322 से 185 ईसा पूर्व)- इस काल में वस्त्र उद्योग काफी उन्नत स्थिति में था। इस समय तक चीन, बलख, अफगानिस्तान और तजाकिस्तान से रेशमी व ऊनी कपड़े तथा खालें और समूर का आयात होता था। इस काल के मुख्य परिधानों में चादर व धोती प्रमुख थे।

कुषाण काल (लगभग 30 ई0 से लगभग 225 ई0 तक)- इस काल में वस्त्रों की जानकारी 'पेरिपल्स ऑफ द एरिथ्रियन सी' नामक पुस्तक से प्राप्त होती है। इससे ड्रेपिंग की विभिन्न शैलियाँ अस्तित्व में

आयीं, जो आज साड़ी पहनने के तरीकों में दिखती हे। भारत के पश्चिमी इलाकों में पारसियों के बसने से पारसी टोपी अस्तित्व में आई।

गुप्त काल (320 ई0 से 220 ई0 तक)- इसे स्वर्ण युग भी कहा गया। सम्राट चंद्रगुप्त के इस युग में सिले वस्त्रों का प्रयोग होने लगा। इस युग में महिलाओं में तौलिया लपेटने की जगह लहंगा पहनने की शुरूआत हुई। यह तौलिया लपेटने की शैली आज भी महाराष्ट्र और दक्षिण भारत में स्त्रियों के पहनावे के रूप में देखी जा सकती है। उत्तरी और पूर्वी भारत के पुरूषों में लुंगी पहनने की शैली का विकास भी इसी युग में हुआ।

मुगलकाल (1526 ई0 से 1857 ई0 तक)- मुगलकाल में पुरूषों में कुर्ता-पायजामा तथा महिलाओं में सलवार-कमीज एवं शरारा का प्रचलन शुरू हुआ। तुर्किस्तान जैसे ठंडे प्रदेश से आने वाले बाबर ने भारत में कोट पहनने की परंपरा की शुरूआत की। सलवार, शेरवानी और अफगानी कराकुली टोपी मुगलों की ही देन है।

परिधान का आविष्कार भले ही भारत में हुआ, किन्तु समय-समय पर भारतीय परिधानों की वेशभूषा में ग्रीक, रोमन, फारस, हूण, कुशाण, मंगोल, मुगल आदि शसन के प्रभावस्वरूप उसका प्रभाव भी देखने को मिला। इन परिवर्तनों के चलते कई नए वस्त्र प्रचलन में आए और भारतीयों ने भी इसको काफी पसंद किया। अंग्रेजों के काल में भारतीयों की वेषभूशा बिल्कुल ही बदल गई।

भारत में कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी और राजस्थान से लेकर नागालैण्ड तक के परिधान विदेशी संस्कृतियों के यहाँ आकर बसने से प्रभावित होते रहे हैं। जहाँ उत्तर-पूर्वी राज्यों में मंगोल जाति के पहनावे का असर दिखता है। वहीं उत्तर-पश्चिम के राज्यों में यूनानियों, अफगानियों और मध्य एशिया के देशों के परिधानों का प्रभाव दिखता हैं भारतीय वस्त्रों के कलात्मक पक्ष और गुणवत्ता के कारण उन्हें अमूल्य उपहार माना जाता था। खादी से लेकर सुवर्णयुक्त रेशमी वस्त्र, रंग-बिरंगे परिधान, ठंड से पूर्णतः सुरक्षित सुंदर कश्मीरी शॉल भारत के प्राचीन कलात्मक उद्योग का प्रत्यक्ष प्रमाण थे, जो ईसा से 200 वर्श पूर्व विकसित हो चुके थे। कई प्रकार के गुजराती छापों तथा रंगीन वस्त्रों का मिश्र में फोस्तात के मकबरे में पाया जाना भारतीय वस्त्रों के निर्यात का प्रमाण है।

वेशभूषा किसी भी समाज और संस्कृति का अभिन्न अंग हैं। यह केवल शरीर को ढ़कने का साधन नहीं है, बल्कि हामरे सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों का प्रतिबिम्ब है। वेशभूषा के माध्यम से हम अपनी पहचान को सुरक्षित रख सकते हैं और अपनी संस्कृति को संजो सकते हैं। इस प्रकार वेशभूषा का महत्व सदा बना रहेगा और इसे संजोने की आश्यकता हमेशा बनी रहेगी।

अनुसंधान पद्धति

उद्देश्य

लोक संस्कृति पर हुए तमाम अध्ययनों से यह पता चला है कि वर्तमान समय में भारतीय लोक संस्कृति संक्रमण काल से गुजर रही है। यद्यपि कि विभिन्न काल खण्डों में आये झंझावातों में भी इसने अपने को अक्षक्षुण रखने का प्रयास किया है। अतः प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य भारतीय वेशभूषा में हो रहे बदलाव का अध्ययन करना है।

परिकल्पना

1. लोक-सांस्कृतिक तत्वों के क्षरण में आधुनिकता की महत्वपूर्ण भूमिका है।
2. लोक-सांस्कृत्कि तत्वों का क्षरण हमारे वेशभूषा के परिवर्तन में सहायक है।
3. उच्च वर्ग लोक-संस्कृति को बहिष्कृत कर रहे हैं, जबकि निम्नवर्ग द्वारा अंगीकार किया जा रहा है।

शोध विधि

प्रस्तावित अध्ययन में समस्त बिहार के लोक सांस्कृतिक क्षेत्रों को समस्त मानते हुए मैथिली, भोजपुरी एवं मगही लोक सांस्कृतिक तत्वों का अध्ययन किया गया। वैसे बिहार में स्पष्टतः पाँच सांस्कृतिक क्षेत्र विद्यमान यथा- मैथिली, भोजपुरी, मगही, अंगिका एवं वज्जिका। लेकिन प्रस्तावित शोध में तीन सांस्कृतिक क्षेत्रों का अध्ययन किया गया है। क्योंकि मिथिला और भोजपुर दो बिल्कुल भिन्न सांस्कृतिक एवं भाशायी परिवेश का नेतृत्व करती हैं। मिथिला की पहचान जहाँ मृदु संस्कृति और भाषा क्षेत्र के रूप में किया जाता है, वहीं भोजपुरी की पहचान कटु संस्कृति एवं भाषा के रूप में चर्चित है। मिथिला मेंभक्ति व श्रृंगार की प्रधानता है तो भोजपुर में वीर रस पर ज्यादा जोर है। जबकि मगही भाषा एवं संस्कृति सम्पूर्ण भारतीय भाषाओं की संस्कृति का श्रोत रही है। इन तीनों भाषाओं में अंतःभाषायी विविधता, क्षेत्रीय विविधता के आधार पर देखने को मिलता है। अतः इन दोनों क्षेत्रों के लोक संस्कृति एवं लोक संस्कृतिक तत्वों में भी काफी अंतर दिखाई पडता है। यथा शाहाबाद की भोजपुरी एवं सारण की भोजपुरी, कोशी की मैथिली एवं दरभंगा अनुमंडल की मैथिली तथा पश्चिमी मगही और पूर्वी मगही में भी काफी अंतर है।

प्रतिदर्श

प्रस्तावित परियोजना कार्य में तीनों भाषायी लोक सांस्कृतिक क्षेत्रों से दो-दो जिला का चयन किया गया। प्रत्येक चयनित जिला से जातीय विविधता के आधार पर पाँच-पाँच गाँवों का चयन किया गया। प्रत्येक

गाँव से 10-10 उत्तरदाताओं का चयन कर प्राथमिक आँकड़े संग्रहित किये गये। इस प्रकार कुल 3x2x5x10=300 प्रतिदर्शों का चयन किया गया। इसके अतिरिक्त विविध क्षेत्रों में लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्तियों का साक्षात्कार किया गया।

परीक्षण सामग्री

इस परियोजना को पूरा करने के लिए 45 एकाँशों वाली एक स्वनिर्मित अनुसूची का प्रयोग किया गया। जिसमें हाँ/नहीं, बहुविकल्पी एवं विस्तृत जवाब वाले प्रश्नों को रखा गया। इस अनुसूची को भरने के लिए महत्वपूर्ण निर्देश को भी अनुसूची पर अंकित कर दिया गया।

आँकड़ा संग्रहण

आँकड़ा संग्रहण का कार्य क्षेत्र विशेष में जाकर किया गया। इस क्रम में सबसे पहले ग्रामीणों के साथ व्यवहार स्थापित किया गया। फिर उनकों स्वनिर्मित अनुसूची देकर महत्वपूर्ण निर्देषों को दिया गया। करीब 1 घण्टे बीत जाने के बाद उत्तरदाताओं से अनुसूचियों को माँग लिया गया और उन्हें सधन्यवाद छोड़ दिया गया। इसके अलावा ग्रामीणों एवं अन्य महत्वपूर्ण व्यक्तियों के साथ सांस्कृतिक मुद्दों पर सामूहिक परिचर्चा भी की गयी। इस प्रकार आँकड़ा संग्रहण का कार्य पूरा हुआ।

प्रदत्त विश्लेषण

प्रदत्त विश्लेषण के लिए पहले अनुसूचियों को भाषायी क्षेत्रों के आधार पर वर्गीकृत किया गया। फिर उन्हें एम0 एस0 एक्सेल में डाटाबेस बनाकर प्रविष्ट किया गया। फिर उन्हें एसपीएसएस सॉफ्टवेयर की मदद से विश्लेषित किया गया। जिससे प्राप्त परिणाम को अगले अध्याय में दिया गया है।

परिणाम एवं विवेचना

सारणी 1- क्षेत्र विशेष की परंपरागत वेशभूषा

क्रम संख्या	परंपरगत भेष-भूषा	क्षेत्र विशेष की परंपरगत भेष-भूषा						कुल	
		भोजपुरीः		मगहीः		मैथिलीः		छः	
1	धोती-कुर्ता	100	33.33	100	33.33	100	33.33	300	100.0
2	दुपट्टा	0	0.00	68	64.15	38	35.84	106	35.33
3	पगड़ी	100	33.33	100	33.33	100	33.33	300	100.0

4	गमछा	100	33.33	100	33.33	100	33.33	300	100.0
5	चादर	0	0.00	68	64.15	38	35.84	106	35.33
6	खडाऊँ	76	33.33	76	33.33	76	33.33	228	76.00
7	सारी-ब्लाउज	100	33.33	100	33.33	100	33.33	300	100.0
8	चूड़ी-लहठी	76	33.33	76	33.33	76	33.33	228	76.00
9	सिंदूर	76	33.33	76	33.33	76	33.33	228	76.00
10	मंगलसूत्र	76	33.33	76	33.33	76	33.33	228	76.00
11	सूट-सलवार	100	51.54	32	16.49	62	31.95	194	64.66
12	बुरका	24	33.33	24	33.33	24	33.33	72	24.00
13	ओढनी-चुनरी	100	38.16	100	38.16	62	23.66	262	87.33
14	हिजाब	24	33.33	24	33.33	24	33.33	72	24.00
15	साफा	24	33.33	24	33.33	24	33.33	72	24.00
16	जरीदार टोपी	24	33.33	24	33.33	24	33.33	72	24.00
17	चूड़ीदार पायजामा	24	33.33	24	33.33	24	33.33	72	24.00
18	गोदना	0	0.00	68	100.0	0	0.00	68	22.66

नोटः- बहुविकल्पी प्रश्न, जहाँ प्रतिदर्श सख्या =300

क्षेत्र विशेष की परंपरागत वेशभूषा को सारणी-1 में दर्शाया गया है। परंपरागत वेशभूषा में धोती-कुर्ता, दुपट्टा, पगड़ी, गमछा, गमछा, चादर, खडाऊँ साडी-ब्लाउज, चूड़ी-लहठी, सिंदूर, मंगलसूत्र, सूट-सलवार, बुरका, ओढ़नी-चुनरी, हिजाब, साफा, जरीदार टोपी, चूड़ीदार पायजामा तथा गोदना आदि

आता है। जहाँ धोती-कुरता, पगड़ी, गमछा एवं साड़ी-ब्लाउज को 300 में से 100 लोगों ने सूचित किया है। वहीं खडाऊँ चूड़ी-लहठी, सिंदूर, मंगलसूत्र को 76 लोगों ने सूचित किया है उसी प्रकार दुपट्टा एवं चादर को 35.33, सूट-सलवार को 64.66, बुरका, हिजाब, साफा, जरीदार टोपी, चूड़ीदार पायजामा को 24 लोगों ने तथा गोदना को 22.66 लोगों ने सूचित किया है। इसमें से दुपट्टा एवं चादर को मगही तथा मैथिली दोनों ही क्षेत्रों में विषेश रूप से सूचित किया गया है जबकि गोदना को मात्र मगही क्षेत्र में ही सूचित किया गया है। इससे स्पश्ट है कि परम्परागत वस्त्र हमारे संस्कृति का एक आवश्यक अंग हैं जो हमारी अलग पहचान बनाते हैं।

सारणी 2- परंपरागत वेशभूषा में आये बदलाव

क्रम संख्या	परंपरगत वेशभूषा	परंपरगत वेशभूषा में आये बदलाव						कुल	
		भोजपुरीः		मगहीः		मैथिलीः		छः	
1	पैंट-शर्ट	100	33.33	100	33.33	100	33.33	300	100.0
2	पायजामा	100	33.33	100	33.33	100	33.33	300	100.0
3	रूमाल	100	33.33	100	33.33	100	33.33	300	100.0
4	टी-शर्ट	100	33.33	100	33.33	100	33.33	300	100.0
5	टोपी	100	33.33	100	33.33	100	33.33	300	100.0
6	सूट-सलवार	100	33.33	100	33.33	100	33.33	300	100.0
7	फ्रॉक	100	33.33	100	33.33	100	33.33	300	100.0
8	गाउन	100	33.33	100	33.33	100	33.33	300	100.0
9	लहंगा	100	33.33	100	33.33	100	33.33	300	100.0.
10	घाघरा-चोली	100	33.33	100	33.33	100	33.33	300	100.0
11	कोट-पैंट	100	33.33	100	33.33	100	33.33	300	100.0
12	शेरवानी	100	33.33	100	33.33	100	33.33	300	100.0

नोटः- बहुविकल्पी प्रश्न, जहाँ प्रतिदर्श सख्या =300

यह सत्य है कि बदलते समय के अनुसार लोगों की परम्परागत वेशभूषा में बदलाव आया है। सारणी-2 में लोगों की परम्परागत वेशभूषा में आये बदलाव को दर्शाया गया है। सारणी से पता चलता है कि प्रायोजित क्षेत्र के शत-प्रतिशत (100) लोग इस बात को मानते हैं कि लोग अब पारम्परिक वस्त्र जैसे धोती-कुर्ता, दुपट्टा, पगड़ी, गमछा, गमछा, चादर, खडाऊँ साडी-ब्लाउज, चूड़ी-लहठी, सिंदूर, मंगलसूत्र, सूट-सलवार, बुरका, ओढ़नी-चुनरी, हिजाब, साफा, जरीदार टोपी, चूड़ीदार पायजामा तथा गोदना आदि को छोड़कर अब नवीन प्रकार की वेषभूशाएँ धारण करने लगे हैं जैसे- पैंट-शर्ट, पायजामा, रूमाल, टी-शर्ट, टोपी, सूट-सलवार, फ्रॉक, गाउन, लहंगा, घाघरा-चोली, कोट-पैंट, शेरवानी आदि। इससे स्पश्ट है कि अब फैशन का ट्रेन्ड बदल गया है। लोग अब पारम्परिक परिधानों को छोडकर नये जमाने के अनुसार वस्त्रों को धारण करने लगे हैं।

निष्कर्ष

इन परिणामों के आलोक में कहा जा सकता है कि वर्तमान समय मे पारंपरिक वेशभूषा के तरीकों में भिन्नता आ गयी है। पहले लोग धोती-कुर्ता, दुपट्टा, पगड़ी, गमछा, गमछा, चादर, खडाऊँ साडी-ब्लाउज, चूड़ी-लहठी, सिंदूर, मंगलसूत्र, सूट-सलवार, बुरका, ओढ़नी-चुनरी, हिजाब, साफा, जरीदार टोपी, चूड़ीदार पायजामा तथा गोदना आदि पहनते थे जबकि अब लोग उसके स्थान पर पैंट-शर्ट, पायजामा, रूमाल, टी-शर्ट, टोपी, सूट-सलवार, फ्रॉक, गाउन, लहंगा, घाघरा-चोली, कोट-पैंट, शेरवानी आदि पहनने लगे हैं।

सन्दर्भ

1. दूबे हरिनारायण (2008), ''भारतीय संस्कृति'' 'शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
2. दूबे श्यामचरण (1960), ''मानव और संस्कृति'', राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली, द्वितीय संस्करण
3. पाण्डेय, डा0 राजबली (1957), ''हिन्दू संस्कार, शिष्टाचार'', वाराणसी।
4. पाण्डेय गोविन्द चन्द्र (1981), ''भारतीय परम्परा के मूल स्वर'', नेशनल पब्लिशिंग हाउस